संपादकीय

10.5005/jras-3-2-v

मानकीकृत प्रकृति मूल्यांकन स्केल एवं आयुर् प्रकृति वेब पोर्टल का आयुर्वेद शिक्षा एवं व्यवहार की मुख्यधारा में समावेश

'प्रकृति' आयुर्वेद की एक महत्वपूर्ण मौलिक अवधारणा है जो किसी व्यक्ति के शारीरिक (रचनात्मक एवं क्रियात्मक), मानसिक एवं व्यवहारिक विशेषताओं के एकीकृत संघटन का वर्णन करती है। प्रकृति स्वास्थ्य एवं साम्यावस्था की स्थिति का भी परिचायक है जिसकी स्थापना चिकित्सक का मुख्य उद्देश्य है। प्रकृति का निर्धारण आयुर्वेदिक निदान और उपचार का एक अभिन्न अंग है जिसे अब P4 (प्रेडिक्टिव, प्रिवेंटिव, पर्सनलाइज्ड एवं पार्टिसिपेटरी) उपचार के रूप में विवेचित किया जाता है।

केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने भारत के विभिन्न प्रसिद्ध संस्थानों के आयुर्वेद विशेषज्ञों, जैवसांख्यिकीविदों तथा चिकित्सकीय मनोवैज्ञानिकों के परामर्श से "मानकीकृत प्रकृति मूल्यांकन स्केल" और "आयुर् प्रकृति वेब पोर्टल" का निर्माण एवं वैधीकरण किया है। इसका उद्देश्य तर्कसंगतता, विश्वसनीयता, पुनरुत्पादकता तथा वस्तुनिष्ठता के साथ व्यक्ति के प्रकृति का निर्धारण करना है। प्रकृति निर्धारण हेतु मानक संचालन प्रक्रिया की मार्गदर्शिका (Manual of Standard Operative Procedures) एवं आयुर् प्रकृति वेब पोर्टल का विमोचन माननीय श्री. श्रीपद येसो नाईक, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सन 2018 में "National Consultative Meet on Intra-AYUSH Collaboration" के दौरान किया गया। प्रकृति मूल्यांकन में एकरूपता लाने के लिए सभी आयुर्वेद संस्थानों में इसे अंगीकृत करना अपेक्षित है। परिषद् ने अपने सभी आयुर्वेद तकनीकी अधिकारियों को इसका प्रशिक्षण दिया है।

इस ज्ञान अधिक प्रसार करने हेतु परिषद् ने देश भर के सभी आयुर्वेद महाविद्यालयों के अध्यापकों को "मानकीकृत प्रकृति मूल्यांकन स्केल" एवं "आयुर् प्रकृति वेब पोर्टल" का प्रशिक्षण देना शुरू किया है। प्रत्येक आयुर्वेद महाविद्यालय के तीन अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है जो आगे संबंधित महाविद्यालयों के अन्य अध्यापकों एवं आयुर्वेद अभ्यर्थियों को प्रशिक्षित करेंगे। इसके लिए चयनित आयुर्वेद महाविद्यालयों में 30 अध्यापकों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें देश भर के लगभग 400 आयुर्वेद महाविद्यालयों से लगभग 1200 अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए लगभग 40 प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की जाएंगी। तदनुसार, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (CCIM) ने सभी आयुर्वेद महाविद्यालयों को केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा आयोजित की जाने वाली प्रशिक्षण कार्यशाला में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अनिवार्य रूप से भाग लेने के लिए निर्देशित किया है।

परिषद् आशान्वित है कि प्रशिक्षण कार्यशालाओं को यथासमय और फलप्रद तरीके से पूरा किया जाएगा। इस स्केल को आयुर्वेद शिक्षा की मुख्य धारा में लाना वर्तमान समय की जरूरत है और निश्चित ही यह व्यक्तिपरक चिकित्सा के क्षेत्र में आयुर्वेद हितधारकों को अधिक सशक्त बनाएगा।

प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान
मुख्य सम्पादक
आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान पत्रिका
महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

10.5005/jras-3-2-vi

Taking Standardized *Prakriti* Assessment Scale and AYUR Prakriti Web Portal to mainstream Ayurveda Education and Practice

Prakriti, an important fundamental concept of Ayurveda, describes constitution of an individual in relation to one's physical, physiological, psychological and behavioral characteristics. *Prakriti also means state of health and wellbeing or homeostasis which is the prime objective of the physician. Determination of Prakriti is an integral part of Ayurvedic diagnostics and treatment which is nowadays interpreted in terms of P4 (*Predictive, Preventive, Personalized and Participatory) medicine.

The Central Council for Research in Ayurvedic Sciences (CCRAS) has developed and validated *Prakriti* Assessment Scale and a user-friendly web portal namely "AYUR Prakriti Web Portal" in consultation with eminent experts of Ayurveda, biostatisticians and clinical psychologists of renowned institutions across India through various national consultative meetings. This intends to capture the *Prakriti* of an individual with rationality, reliability, reproducibility and maximum objectivity. The "Manual of Standard Operative Procedures (SoPs) for *Prakriti* Assessment" and "AYUR Prakriti Web Portal" has been launched by Hon'ble Sh. Shripad Yesso Naik, Minister of State (Independent charge), Ministry of AYUSH, Govt. of India, during 'National Consultative Meet on Intra-AYUSH Collaboration' in 2018. Now it has been desired to adopt it in all Ayurveda institutions for uniformity in *Prakriti* assessment. The Council has trained all its technical officers of Ayurvedic Sciences on the same.

Taking forward this, to further disseminate this knowledge, the Council has initiated imparting training on standard operative procedures of *Prakriti* Assessment Scale and AYUR Prakriti Web Portal to the faculty of all Ayurveda colleges across the country. Three faculties from each Ayurveda college are being trained who in turn will further train the other faculty members and Ayurveda scholars of their respective colleges. A three-day training workshop for 30 faculties in one training workshop is being organized at one of the Ayurveda colleges. About 40 training workshops will be conducted for training approximately 1200 faculties from about 400 Ayurveda colleges across the country. Accordingly, the Central Council for Indian Medicine (CCIM) has given directions to all the Ayurveda colleges to participate in the training workshop compulsorily as per training workshop scheduled by CCRAS.

The Council believes that the training workshops will be completed timely and in a fruitful manner. The introduction of this Scale in mainstream Ayurveda education is the need of the hour and will certainly strengthen and empower the Ayurveda fraternity in the field of personalized medicine.

Prof. Vaidya Kartar Singh Dhiman
Editor-in-Chief
Journal of Research in Ayurvedic Sciences

Director General
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences
Ministry of AYUSH, Government of India, New Delhi